काया पलट

मनोरमा श्रीवास्तव

काया पलट

उपन्यास

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

काया पलट

मनोरमा श्रीवास्तव

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1991 : मूल्य : 5.50

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110 091

प्रकाशकीय

प्रौढ शिक्षा में नवसाक्षरों के लिए साहित्य का अभाव सदैव रहा है। भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ विभिन्न अभिकरणों के रचनात्मक सहयोग से ऐसे साहित्य के निर्माण एवं प्रकाशन की दिशा में अग्रणी रहा है। समय-समय पर प्रयोजन से आयोजित लेखक कार्यशालाओं में से विगत कार्यशाला में प्रस्तुत पुस्तक की रचना संभव हो पायी।

मशहूर कथाकार श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव की इस पुस्तक 'काया पलट' में महिला वर्ग से जुड़ी समस्याओं—महिला प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, कार्यात्मक साक्षरता, स्वास्थ्य रक्षा, घरेलू कुटीर उद्योग धन्धों के बारे में जानकारी तो है ही, इनसे जुड़ी समस्याओं के समाधान भी इसमें सुझाये गये हैं।

इस रोचक पुस्तक को आप केवल लाभप्रद ही नहीं वरन् जीवन के विभिन्न सोपानों से जुड़ा होने के कारण अत्यन्त ही उपयोगी पाएंगे।

रूबी किड फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं एशियन साउथ पैसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एजूकेशन के सहयोग से ही यह प्रकाशन सभव हो पाया है। इस हेतु हम सभी के कृतज्ञ हैं।

—कैलाश चौधरी
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
प्रबन्ध न्यासी, रूबी किड फाउंडेशन

काया पलट

काया पलट

शहनाई बज रही थी। पालकी तैयार सजी रखी थी। पंडित जी शोर कर रहे थे–'अरे बिटिया को जल्दी से पालकी पर बिठाओ। शुभ घड़ी बीती जा रही है।' पर राधा अपनी प्यारी भाभी रमिया से लिपटी रो रही थी। लोग जितना छुड़ाते वह उतना ही कस के उन्हें पकड़ लेती। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि वह अपनी भाभी के बिना रह ही न सकेगी। लग तो ऐसा रमिया को भी रहा था क्योंकि जब रमिया इस घर में बहू बन कर आयी थी तब राधा बिल्कुल नन्ही सी गुड़िया थी। दोनों एक दूसरे के बिना कभी नहीं रहीं। कभी किसी ने नन्द भौजाई की खटपट तो सुनी ही नहीं थी। राधा की सिसकियां अभी कम भी नहीं होने पायी थीं कि राधा की बुआ आकर दुलार करने लगी–"रोएगी तो है ही। पढ़ी-लिखी हमारी चिरैया का गांव मा डार दिहिन हय। जब गांवय मा डारेक रहय तो जाने काहे पढ़ाइन लिखाइन।"

इतना सुनते ही राधा की हिचकियां और जोर हो गयी, तभी रमिया राधा के कान में फुसफसाई–मेरी लाड़ली बीबी तुम्हें तो खुश होना चाहिये कि तुम ऐसी

जगह जा रही हो जहां सबको तुम्हारी जरूरत है। इतने में ही राधा के बड़े भइया ने जबरदस्ती उसे छुड़ा कर पालकी में बैठा दिया।

राधा गठरी बनी पालकी में बैठ गयी। अपने ही घुटनों में मुंह छिपाये सिसकती रही। उसके जाने के बाद घर सूना हो गया। घर मोहल्ले टोले सभी जगह राधा की ही तारीफ हो रही थी। बड़ी गुनी लड़की है। पढ़ाई, लिखाई, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई सभी कुछ तो आता है। बड़ी-बूढ़ी आशीष भी देती जा रही थीं—देखना ससुराल में राज करेगी राज।

रास्ते भर राधा सुख दुख के झूले में झूलती रही। जब गांव की याद आती तब मन दुःखी हो जाता। जब भाभी की याद आती तब मन कुछ और ही सोचने लगता।

ससुराल में सभी राधा के रूप रंग गुन ढंग देखकर खुश थे। रात को गोपाल ने जब पहली बार घूंघट खोला तो राधा ने जो-जो कल्पना की थी, वह कुछ भी सुनने को नहीं मिला। सुनने को मिला—'राधा इस घर को, इस गांव को तुम्हारी बहुत जरूरत है। तुम चाहो तो इसकी काया पलट सकती हो। हां मेरी सरला का भी ध्यान रखना।'

सरला गोपाल की अकेली छोटी लाडली बहन थी। वह तो अपनी भाभी को पाकर निहाल हो गयी थी। हर समय साथ ही रहती है। कोई कुछ कहता भी तो कहती—'मैं क्या करूं, भाभी ने तो कुछ जादू कर दिया है।' कभी कभी उसकी पड़ोसन फूफू कहती—'घबरा नहीं जादू जल्दी ही उतरेगा।' सभी सोच रहे हैं अभी नयी नयी बहू आयी

है इसलिये ऐसा है। थोड़े दिन बाद तू तू मैं मैं शुरू हो जायेगी।' पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

हंसी खुशी दिन बीतने लगे। राधा सबको पसन्द थी। सब राधा को पसन्द थे। उसको सबका सरल व्यवहार बहुत पसंद था। उसे सरला, विमला, धन्नो के साथ बड़ा अच्छा लगता था। विमला, धन्नो मोहल्ले की ही लड़कियां थीं। सभी उसे बहुत प्यार करती थीं। बस राधा को यह अखरता था कि ये सुन्दर भोले-भोले मुखड़े, अशिक्षा तथा अन्य शिल्प कला के अभाव में बिना तराशे हुये रत्न के समान हैं।

राधा बहुत चतुर थी एक दिन उसे घेरे आस पास की बहू बेटियां बैठी थीं। वह उठी और ढोलक उठा लायी और स्वयं ही बड़ी अच्छी धुन में गाना भी शुरू कर दिया—

भौजी मानो, बहनो मानो, मानो बात हमारी,
पढ़िहौ लिखिहौ ज्ञानी बनिहौ, जनिहौ बतियां सारी,
फिर न रहिहौ तुम अज्ञानी, सब जन मानो बात हमारी।
घर बाहर का खाला रखिहौ, फिजूल खर्च न करिहौ,
चोर लुटेरन से तुम बचिहौ, बैंक रुपैया रखिहौ,
फिर न करिहौ तुम नादानी, सब जन मानो बात हमारी।
नये ज्ञान से आय बढ़इहौ, जीवन सुखी बनइहौ,
मां, देश का हित तुम करिहौ, आपन मान बढ़इहौ,
फिर तो बनिहौ तुम सम्मानी, सब जन मानो बात हमारी।
नयी-नयी बातें सब जनिहौ, तुम कुरीति से बचिहौ,
खुद पढ़ि जइहौ घर का पढ़इहौ, अच्छा भविष्य बनइहौ,
फिर बितिहै सुखी जिन्दगानी, सब जन मानो बात हमारी।

सभी ने मिलकर गाना गवाया, खूब उठा। गाना खत्म होने पर राधा ने अपनी बात छेड़ी–हम सभी लोग रोज दोपहर वहां बैठकर इधर-उधर की बातें करते हैं। कल से हम लोग थोड़ी देर पढ़ाई लिखाई की बातें किया करेंगे।

सरला ने बीच में ही टांग अड़ा दी। 'भाभी, पढ़ाई लिखाई की बात न किया करो।' विमला ने भी हां में हां मिलाई–'हां भौजो गाना सिखाव जरा मजा आये।'

भौजो ने दूर की कौड़ी छोड़ी–'बीबी रानी जब नन्दोई की चिट्ठी आया करेगी तब हमीं से पढ़ावौगी, हमीं से उत्तर लिखावौगी। ठीक है हमारे तो मजे हैं।'

इतना सुनते ही सरला के तो गाल ही लाज से लाल हो गये। गौना होने ही वाला था। विमला नीचे नजर झुका मुस्कराने लगी। भौजी नन्द के दिल की बात ताड़ने में बड़ी होशियार होती हैं।

वह समझ तो गयी। इन लोगों का मन तो हो रहा है लेकिन अब कहे तो कहे कैसे।

धन्नों कहने लगी–'भौजी कल कपड़ा ले आयें, अम्मा ने कहा है जम्पर बनाना सीख लो।'

राधा सुनकर बड़ी खुश हो गयी। कहने लगी–'मैं तो चाहती ही हूं। तुम लोग सब सीखकर खूब गुनी हो जाओ। जिसके यहां जाओ वहां अपना भी नाम करो और मेरा भी।

कल सब लोग कपड़ा, सुई धागा और जिसका मन हो वह कापी पेंसिल लेकर आना। अब चला जाय अपने अपने काम पर।' 'हां भौजी' कहकर सब लोग उठ गयीं।

'बहुअर ओ बहुअर'–बरोठें में पैर रखते ही गोपी काका जोर-जोर से आवाज देने लगे, राधा ने आवाज सुनते ही पीढ़ा सरला की तरफ खिसका दिया और बोली–'बीबी रानी रोटी करारी सेंकना, नहीं तो काका को पसन्द नहीं आयेगी। मैं अभी आयी।'

जब तक राधा पहुंचती तब तक दो तीन आवाजें और लग गयीं। वह लोटे में पानी और अंगौछा लेकर पहुंची। जैसा कि उसका रोज का नियम था। काका के आवाज लगाते ही राधा पानी अंगौछा देकर खाना परोसने की तैयारी करने लगती थी। लेकिन आज काका ने एक लिफाफा राधा को थमाया। 'बहुअर पहले चिट्ठी पढ़ो सोनपुर से आयी है।'

घर में सभी को इस चिट्ठी का बेकरारी से इंतजार था। गौने की तारीख लिखकर भेजी गयी थी। समय पास आता जा रहा था। अभी सब तैयारी करनी बाकी थी। राधा ने फुरती से लिफाफा खोल पढ़ना शुरू किया–

श्रीमान् समधी साहब,

रामनोहार

पत्र लिखने में देर हो गयी है। इसके लिये माफ करिएगा बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं .....

बस इसके आगे पढ़कर सुनाने की राधा की हिम्मत ही नहीं पड़ी। वह चुप हो गयी। उसे लगने लगा अभी वह लड़खड़ा जायेगी।

काका ने हुंकारी देना बन्द करके जरा देर इंतजार के बाद कहा–'क्यों चुप हो गयी ? आगे पढ़ो।' राधा फिर भी चुप। काका को अब चिन्ता हुई। फिर बोले– 'बहुअर जल्दी पढ़ो, समधी के ऊपर कौन मुसीबत आ गयी।' राधा फिर भी चुप रही। वह सोचने लगी कैसे आगे पढ़ूं। कैसे सरला के सपने बिखेर दूं। वह जानती थी सरला भी जरूर रोटी सेंकना रोक कान इधर ही लगाये होगी।

काका भी कहने लगे–'लाओ, हम चिट्ठी किसी और से पढ़वा लेंगे। जाने ऐसा भी क्या लिखा है, जो बोलती बंद हो गयी।'

राधा सोचने लगी, घर की बात घर ही में रहे बाहर जाने से लोगों को खुसर फुसर करने का एक मसाला मिल जायेगा। इस लिये चिट्ठी नहीं दी। कहने लगी–'बाहर पढ़ने से तो अच्छा है हम ही पढ़ दें। वह दुखी मन से पढ़ने लगी–

'.....समधी तुम्हारा दामाद हमारा कपूत बारहवां दरजा पास करके अपने को लाट-गवरनर समझने लगा है। किसी भी तरह से राजी नहीं हो रहा है। कह रहा है हम अनपढ़ संग जिन्दगी नहीं बिता सकते हैं। हमको समधी साहब माफ करना हम बहुत ही शर्मिंदा हैं।'

इतना सब सुनते ही ठकुरई खून गरमा गया। काका

गरज पड़े–'बस बस बहुअर बस करो। हम भी किसी से कम नहीं हैं।' उन्होंने अपनी मूंछों को ऊपर उठाते हुये कहा–'हमारी सरला को खाने पीने की यहां कमी नहीं है। रानी बनकर राज करेगी।'

राधा कहने लगी–'काका एक बार जाकर लाला जी को आप समझा दीजिये। शायद मान जायें।'

काका गरज पड़े–'यह हमारे बस का नहीं है कि कल के छोकरों के सामने जाकर नाक रगड़ें। जाने कितने नौकर चाकर खा पी रहे हैं। एक बिटिया हमको भारू हो गयी है। उसके लिये गिड़गिड़ाएं जाकर।'

राधा चुप हो गयी। वह समझ गयी इनको समझाना मुश्किल है। वह अपनी लाडो के मन की हालत अच्छी तरह समझ रही थी। यौवन की देहरी पर खड़ी सरला ने राजीव को लेकर जाने कितने सपने बुने थे। आज सब बिखर गये। उसकी तो हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी कैसे चौके में जाये। वह ठिठकी खड़ी सब सोच ही रही थी कि कानों में आवाज पड़ी–

'बहुअर खाना जल्दी परोस दो, अभी चौपाल जाना है।'

वह भारी कदमों से चौके में गयी और जिसका उसे डर था वही हुआ। सरला राधा से लिपट फफक कर रो पड़ी।

सरला के हर समय मुस्कराने वाले होठों ने मुस्कराना छोड़ दिया। आंखें कुछ खोजती हुई सी चारों ओर निहारती रहती हैं। उसके कदम जो हर समय थिरकते रहते थे अब बोझिल हो गये हैं। कल रात में तो बड़ी मुश्किल से समझाने बुझाने पर आंसू थमे।

राधा और सरला ने मिलकर जल्दी जल्दी घर के सारे काम निबटा लिये। सरला आज फिर बहुत दिनों बाद पढ़ने बैठी है। बस पांच दरजा पास कर पायी थी कि उसकी मां नहीं रही। उसके बाद पढ़ाई नहीं हो पायी। जो कुछ आता भी था वह चौका चूल्हा में सब भूल गयी थी। शादी के समय यह तय हुआ था कि वह आगे पढ़ेगी। लेकिन सरला का मन ही नहीं लगा।

राधा ने पढ़ाना शुरू ही किया था, कुंडी खटकी। जाकर खोला तो देखकर हैरान रह गयी। रमकलिया, सोनपतिया, विमला, धन्नो सभी के हाथों में कागज, पेंसिल, कपड़ा, सुई, तागा था। उसने सबको बैठाया। उसे बड़ी खुशी हुई। उसने कहा—देखो, सरला लिख रही है। आओ पहले पढ़ लिख लिया जाय, फिर कटाई सिलाई होगी।

राधा एक एक को लिखना बताने लगी। विमला और धन्नो के अक्षर टेढ़ मेढ़े आ रहे थे। कुछ दिन स्कूल गयी थी फिर छोड़-छाड़ कर घर बैठ गयी थी। स्कूल छोड़ने के बाद दोहराया भी नहीं, इस लिये सब भूल भाल गयी

थी। कोई भी चीज सीखी जाय, उसके बाद उसका बोहराना बहुत जरूरी है।

रमपतिया, सोनपतिया का तो हाथ पकड़ पकड़कर सिखाना पड़ा। छोटी उमर से घास छीलते हाथ बड़े कड़े हो गये थे। ऐसे हाथों से तो पेंसिल पकड़ना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है।

राधा को बड़ी खुशी हो रही थी। आज उसके बरौठ में बैठ सब पढ़ लिख रही थीं। उसे भाभी और गोपाल भइया के कहे शब्द बार बार याद आ रहे थे। गोपाल तो दूसरे ही दिन पंतनगर चला गया था। उसे अपना कृषि का कोर्स पूरा करना था। हां जाते जाते कह गया था– 'राधा मेरा सपना है इस गांव को खुशहाल बनाने का।' राधा तभी से जुटी है। वह चाहती है गोपाल के आने से पहले ही वह गांव में खुशहाली ला दे।

सरला ने टोका–'भौजी अब क्या लिखें?' राधा ने पन्ना खोल कर रख दिया। खुद अन्दर जाकर कैंची, इंचोटेप, मशीन उठा लायी। जब देखा, अब इनका पढ़ने में मन कम लग रहा है तब उसने इन लोगों को जांघिया काटना सिखाया, पहले पुराने अखबार पर फिर कपड़े पर। आज पहला दिन था। सभी में बड़ा उत्साह था। शाम होते होते सबने सिल भी लिया। सभी बड़ी खुश थीं। कोई भी नया काम आने पर खुशी तो मिलती ही है। राधा ने चलते चलते सबसे कहा–'कल कुछ जल्दी आ जाना।'

रात में राधा अपने गोपाल को चिट्ठी लिखने बैठ गयी। आज उसकी कलम रुकने का नाम नहीं ले रही थी। उसने सब कुछ लिख दिया। वह सोने के लिये लेटी, उसे झपकी आयी ही थी कि सरला की चीख से उठ बैठी। राधा ने पूछा–'क्या कोई सपना देखा है?' सरला राधा से चिपक कर फूट फूट कर रोने लगी। सिसकियां रुकने का नाम ही नहीं ले रही थीं। राधा ने पूछा– 'क्या लालाजी को देखा?' सिसकियों के बीच सरला ने बताया– 'हाँ ये आये थे। मैं मिलना चाह रही थी लेकिन अचानक चारों ओर बस अंधेरा ही अंधेरा छा गया। कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अंधेरे में बहुत देर तक भटकती रही लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। ये भी जाने कहां चले गये।'

राधा ने कहा–'जानती है यह अंधेरा क्या था?' सरला ने भोलेपन से नहीं में सिर हिला दिया।

राधा ने बताया, यह अंधेरा अशिक्षा का था, जिसके कारण राजीव तुमसे दूर हो गया। लेकिन तुम चिन्ता न करो। मैं यह अंधेरा दूर करके तुम्हें नयी रोशनी दिखाऊंगी। सरला के मुख से अचानक निकल पड़ा–'सच भौजी!' और साथ ही एक हल्की सी मुस्कान भी चेहरे पर आ गयी। राधा सरला को लेकर एक ही चारपायी में लेट थोड़ी देर सुख दुख की बातें करती रहीं। फिर दोनों सो गयी।

आज सोनपतिया की बड़ी बहन सुखिया आयी थी। उसने लकुचाते हुये राधा से कहा–'ई हमका घसखुद्दी कहत हय। बस हमहूं का इत्ता पढ़ाय लिखाय देव कि यू सब न सुने का पड़।' इतना सुनते ही सभी खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

राधा ने हंसते हुये कहा–'देखो पढ़ाई लिखाई सभी की जिन्दगी में बहुत जरूरी है। इसकी कमी जीवन में देर सबेर सभी को अखरती है। इस लिये जो हुआ सो हुआ, अब मैं चाहती हूं तुम लोग गाँव में अपने आस पास की बहू बिटियन को हमसे बस मिलवा दो।'

विमला बोली–'भौजी तुमसे तो सभी मिलना चाहती हैं। अबकी इतवार को सबको बुला लाएंगे।'

बीच में रमकलिया ने टोंका–'भौजी इतवार को नहीं शनिवार को बुलाओ।'

राधा ने मुस्कराते हुये कहा–'हां ठीक रहेगा। शनिवार को गाना बजाना तो होता ही है उसके भी गाने सुन लिये जाएंगे।'

कान्ती ने भी हां में हां मिलाई–'हां भौजी उस दिन जरा सबसे बातचीत भी हो जायेगी।'

राधा ने बीच में टोका–'अच्छा काम ज्यादा बातें कम।' सभी अपने अपने काम में लग गयीं। करत करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान। अब धीरे धीरे सभी अपने कामों में कुशल होती जा रही थीं।

आज सभी बिटिया बहुरिया दस-पन्द्रह मिनट पहले ही आ गयी थीं। शनिवार था। सभी को इस दिन ज्यादा आनन्द आता है।

सब सुखिया को निहारे जा रही थीं और सुखिया, थी कि बस हंसे चली जा रही थी। राधा ने कहा–'सुखिया हमें भी तो कुछ बताओ क्या बात है ?'

सुखिया कहने लगी–'अरे भौजी आज बाजा में बताया गया था कि बिना छिलका उतारे सब्जी बनाना चाहिये। रास्ते में आंगन बाड़ी वाली बहनजी मिली थीं। उनसे जब यह सच बताया गया तो उन्होंने भी उल्टी विद्या बताई। वह तो बाजे से भी दो पांव आगे निकलीं। कहने लगीं– चावल का मांड़ फेंकना नहीं चाहिये। उसको दाल में डाल देना चाहिये। आटा से चोकर नहीं निकालनी चाहिये और जाने क्या क्या उल्टा सीधा बताया।'

नहले पर दहला मारा धन्नो ने–'भौजी अबकी 'घर आंगन' में अम्बे भौजी को चिट्ठी लिखवाय दो। यह सब उल्टा-सुल्टा बताती रहती हैं।'

राधा थोड़ी देर चुप इन सबकी बात सुनती रही। सोचती रही, इनको अपनी बात समझानी किधर से शुरू करूं।

सरला ने टोंका–'भौजी कहां खो गई ?'

राधा ने चुटकी लेते हुये कहा–'लालाजी के पास चली गयी थी।' सब हंस पड़ीं, सरला शरमा गई।

राधा ने अपनी बात शुरू की–'देखो घर का खाना तुम्हीं लोग बनाती हो। इसलिये तुम लोगों की जिम्मेदारी है। खाना ऐसा बनाओ जिससे परिवार के सदस्यों की तन्दुरुस्ती अच्छी रहे।'

सुखिया ने टोका–'अरे भौजी क्या बनायें क्या खिलायें ? जो कुछ खेत में हो जाता है वही खाना है। चार पैसे तो बचता नहीं जो सब्जी खाने को मिल जाये।' राधा ने कहा–'सब्जी लेने बाजार क्यों जाना पड़ता है ? सब्जी तो आप लोग खुद ही उगाइये। इतनी उगाइये, आप तो खाइये ही बाजार में बेचकर चार पैसे भी बचाइये, जो दुःख मुसीबत में काम आए।'

पास बैठी रामू की बहुरिया राम दुलारी ने पूछा–'दिदिया, जमीन जो है उसमें तो गेहूं धान बोया जाता है।'

राधा ने बात बढ़ाते हुये कहा–'हां वही मैं बता रही हूं। देखो, अपने गांव में हर घर के पास इतनी जमीन पड़ी है कि उसमें खूब मजे से सब्जी उगाई जा सकती है। सुखिया और धन्नों के आंगन में ही बहुत जगह है।'

सुखिया खुश हो गयी–'हां भौजी यह तो बात है। पर क्या बोयें।'

'हां यह सब मैं तुम सबको बता दूंगी। मेरे पास इसकी बहुत अच्छी किताब है।'

सुखिया उदास हो गयी–'भौजी हम तो पढ़ नहीं पाइब।'

राधा ने सोचा मौका अच्छा है। मौके का फायदा उठाते हुये बात बढ़ाई–'बिमला, कान्ती, रमादेवी तो किताब पढ़ लेने लगी। तुम भी रोज आया करो, तुम्हें भी पढना आ जायेगा। वैसे इसे तो पढ़कर मैं समझा दूंगी। लेकिन किताबें ज्ञान का खजाना हैं। इसमें इतना ज्ञान भरा है, दोनों हाथ से लूटो फिर भी कम नहीं होगा।'

राधा ने सबके चेहरे पढ़ते हुये अनुभव किया कि सब पर प्रभाव हो रहा है। बड़ी खुश भी हुई।

राधा ने कहा–'जरा सुखिया के छिलके वाली सब्जी और मांड़ की बात और समझा दें।

'देखो हम लोगों को चाहिये कि खाना ऐसे बनायें कि उनके पौष्टिक तत्व नष्ट न होने पायें। बल्कि उनमें और बढ़ जाये।

इसके लिये हमें सब्जी काटने से पहले धोकर, सब्जी का यदि छिलका पतला हो तो बिना छीले ही बड़े-बड़े टुकड़ों में काटना चाहिये। खाने को बार-बार गरम नहीं करना चाहिए।

हरी पत्ती की सब्जियों को स्टेनलेस के चाकू से काटकर लोहे की कड़ाही में पकाना चाहिये।

दालें हमेशा मिली जुली बनाना चाहिये।"

बिमला ने कहा–'भौजी, हमें अरहर और उरद की मिली दाल बहुत पसंद है।'

'हां दाल में बथुआ, पालक, लौकी डालकर बनायें। इससे भी पौष्टिकता बढ़ जाती है।

आटे से चोकर न निकालें। गेहूं के आटे में थोड़ा सा सोयाबीन, चने या जौ का आटा मिला लें।

रोटी सेंकने के कम से कम चार घण्टे पहले आटा सानकर रख देना चाहिये। यदि खमीरी आटे की रोटी हो तो ज्यादा पौष्टिक होती हैं।

नाश्ते में तली चीजें न खायें। मूंगफली, चना, मूंग, लोबिया अंकुरित करके खायें, बहुत लाभ होगा।

सोना ने कहा–'भौजी हम रोज अंकुरित चना खाते हैं।'

भौजी ने भी कहा–'तभी तो गोल मटोल हो।'

सभी हंस दीं।

'चावल में अंदाज से पानी डालें ताकि निकालना न पड़े। यदि जरूरी ही हो तो मांड़ से ही आटा मांड़ लें। दाल या सब्जी में डाल दें।

गाजर टमाटर मूली अमरूद पपीता कच्चा ही खाने से ज्यादा लाभ होता है।'

सोना को गाने ज्यादा अच्छे लगते हैं। वह कहने लगी–'भौजो, बताया तो बहुत अच्छा है। क्या ऐसा हो सकता है कि इसका गाना बन जाये।'

विमला ने टोकते हुये कहा–'भौजी, सोना का बस चले तो यह बात भी गाने में ही करे।

राधा ने कहा–'गाना तो अच्छी बात है। मैं जल्दी ही इस पर गाना बनाकर दे दूंगी, दे नहीं दूंगी यहीं याद भी करा दूंगी।'

सोना बड़ी खुश हो गयी–'वारी मोरी भौजी जुग जुग जियो।'

सोना ने कुछ इस अन्दाज से कहा कि राधा भी मुस्कराये बिना न रह सकी।

'अच्छा अब कल फिर मिलेंगे। आज तो बातें ज्यादा हो गयीं। गाने बजाने की कटौती हो गयी।'

सुखिया ने उठते उठते कहा–'भौजी ज्ञान की बातें ज्यादा जरूरी हैं। अगली बार कसके गाना बजाना हो जायेगा।'

राधा गोपाल की चिट्ठी पढ़ती गयी, साथ ही साथ

कभी मुस्कराती जाती कभी शरमाती जाती। आखिरी पन्ना पढ़ते वह उदास हो गयी।

लिखा ही कुछ ऐसा था। उसकी आंखों के सामने सरला का मासूम चेहरा घूम गया। वह भी सोचने लगी अब क्या होगा। आखिरी पन्ना फिर पढ़ा। पहले सोचा, सरला से क्या छिपाना, उसे बता दें। लेकिन यह विचार आते ही परेशान हो गयी। कैसे बतायेगी। उसके सपनों का राजकुमार उसे छोड़ किसी और से शादी करने जा रहा है। थोड़ी देर आंखें बन्द किये कुछ सोचती रही। फिर कलम उठा राजीव को पत्र लिखना शुरू कर दिया। अन्त में यही लिखा–'बस इसी साल इन्तजार कर लो। मैं जब से आयी हूं लगातार सरला को पढ़ा रही हूं। वह भी आंखों में तुम्हारे ही सपने सजोए, मन में तुम्हारी आस लिये दिन रात पढ़ने में जुटी रहती है। इस वर्ष हाईस्कूल का फार्म भी भरवा दिया है। बस परीक्षा फल निकलने तक इंतजार कर लो।'

पत्र लिखने के बाद कुछ राहत मिली पर मन उचाट सा हो गया। किसी काम में मन नहीं लग रहा था। सरला ने टोका भी–'भौजी क्या बात है? असली बात टाल कर इतना ही कहा–'बबो रानी खूब मन लगाकर पढ़ो जिससे पास हो सको। पास होना बहुत जरूरी है।'

बात अभी पूरी होने भी न पायी थी कि कुंडी खटकी। दरवाजे पर पारो खड़ी थी। पारो को देखकर

राधा को याद आया, आज तो उसे कमला के घर जाना है। कई रोज से कह रही है। आज तो उसके घर पर सत्यनारायण की कथा भी है।

राधा को चुप देख पारो कहने लगी–'जिया इंतजार कर रही है। आपको बुलाया है।' उसका मन तो नहीं हो रहा था जाने का, पर जाना जरूरी है। यह सोच कर कह दिया–'रुको अभी चलते हैं।' जल्दी जल्दी तयार होकर राधा पारो के साथ हो ली।

घर पहुंचते ही घर का जो हाल देखा वह बेहाल था। चारों ओर गन्दगी ही गन्दगी थी। घर के बाहर ही दरवाजे पर गोबर का ढेर था। चबूतरे पर नहाने धोने से चारों ओर कीचड़ हो गया था। बदबू भी आ रही थी। घर में घुसते ही बरौठे में एक चारपाई पर कमला का लड़का बैठा रो रहा था। नाक बह रही थी। हाथ में छिला हुआ आधा केला था। मक्खियां भिनभिना रही थीं। अन्दर पहुंचने पर इसी से मिलता जुलता नजारा देखने को मिला। उसे आने में देर हो गयी थी इसलिये प्रसाद बंट चुका था। दोनों ओर कुभियां पूरे कमरे में लुढ़की पड़ी थीं। मक्खियां चारों ओर भिनभिना रही थीं। प्रसाद भी खुला रखा था। राधा के जाने पर कमला, जो कि दूसरे कमरे में थी, लपक कर आयी। एक कटोरा लेती आयी। उसे अपनी मैली कुचैली धोती से जल्दी से पोंछ कर चरणामृत दे दिया। कटोरे में प्रसाद के साथ एक मक्खी भी आ गयी। उसे भी जल्दी से हाथ से ही निकाल दिया।

पंजीरी में रखे फल, जो काफी देर पहले से कटे हुये खुले रखे थे, उन पर काफी देर से मक्खियां चक्कर लगा रही थीं। राधा ने प्रसाद तो ले लिया पर इतनी गन्दगी देखकर उसका दिमाग चकरा गया। समझ में नहीं आ रहा था, क्या कहे क्या करे। कमला जिद कर रही थी—खाना खा के ही जाना, पर राधा रुक न सकी। काम का बहाना करके चली आयी।

अपने को रोक न सकी, रास्ते में सरला से कह ही बैठी—'इतनी गन्दगी, यही तो सब इनकी बीमारी और गरीबी की जड़ है।'

उसने सोचा कल ही जब सब दोपहर को इकट्ठा होंगी तब अवश्य ही इस पर चर्चा करूगी।

आज राधा बार-बार घड़ी देख रही है। जल्दी से दो बजें और सब लोग बरोठे में इकट्ठा हों! उसे एक नहीं दो दो खुशखबरी सुनानी थी।

जैसे ही सब लोग इकट्ठा हो गये सबने अपनी अपनी

कापी किताब निकाल ली। राधा ने कहा–'पहले पांच मिनट बात कर लेते हैं। फिर पढ़ाई लिखाई शुरू होगी।'

बिमला ने बीच में कहा–'दीदी आज तो हमें चमड़े वाला पर्स बनाना है।'

कान्ती ने डपटते हुये कहा–'पहले पूरी बात तो सुन लो।'

राधा ने बताया–'आज सुबह बी० डी० ओ० साहब आये थे। उन्होंने कृषक चर्चा मण्डल बनाने को कहा। मैंने तुम लोगों के नाम लिखकर भेज दिये हैं। अगले महीने तुम लोगों को सात दिन का प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। उससे तुम लोगों को नयी नयी जानकारी तो मिलेगी ही, पैसे भी मिलेंगे।'

धन्नों ने कहा–'अरे वाह भौजी, तुम तो कमाल की हो।'

राधा ने पूछा–'आज कमला पारो सुखिया क्यों नहीं आयीं ?' पता चला किसी का लड़का बीमार है तो किसी की लड़की, किसी की नन्द बीमार है तो किसी की भौजाई।

राधा ने अपनी बात यहीं से जोड़ ली। 'जानती हो अपने गांव में अक्सर लोग बीमार क्यों पड़ते हैं ?'

उत्तर एक भी नहीं मिला। सब चुप रहे। राधा ने कहा–'अपने घर परिवार को हमी तुम बीमार बना रहे हैं।'

यह सुन सभी को अटपटा लग रहा था, लेकिन धीरे-धीरे अब सब समझने लगी थीं कि यह जो भी कहेगी जो भी समझायेगी वह सब हम लोगों की भलाई के लिये ही होगा।

रामरतिया ने पूछा–'कैसे भौजी ?'

राधा ने समझाया–'देखो घर बाहर की सफाई की जिम्मेदारी हम लोगों पर है। अगर हम लोग सफाई नहीं रखेंगे तो घर बाहर चारों ओर गन्दगी ही गन्दगी होगी। बच्चों पर मक्खियां भिनभिनाती होंगी। स्वयं भी गन्दा खाएंगे, गन्दगी में रहेंगे। गन्दगी बीमारी की जड़ है। बीमारी का जब मन होगा, जिसे चाहेगी उसे धर पकड़ेगी। बीमारी होने पर खर्चा होगा तब पैसे का नुकसान। बीमार हो जाने पर काम का हरजा तब भी पैसे का नुकसान। यानी गरीबी भी बीमारी के कारण आ जाती है।'

सोनपतिया ने बड़े दुखी स्वर में कहा–'भौजी बात तो ठीक है कभी इतना सब सोचा ही नहीं।'

राधा ने कहा–'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेहि। अब तुम लोग अपने घर की, अपने बच्चों की, घर के आसपास की सफाई का बहुत ध्यान रखना। कोई समस्या आये तो बताना।'

रामरतिया ने कहा–'भौजी, एक खुशखबरी तो बताना ही भूल गयी। सोना के अम्मा के लड़का हुआ है।'

राधा भी खुश होती हुई बोली–'यह तो बड़ी खुशी की बात है।'

बीच में ही सोनपतिया बोल पड़ी–'सबसे खुशी की बात तो यह है कि आज सोना सताना बहनी बन गयी।'

राधा ने आश्चर्य से पूछा–'क्या मतलब?' सोनपतिया ने बताया–'सोना के यहां छठा भाई हुआ है।'

राधा यह सुनकर अन्दर से तो परेशान हो उठी। पर ऊपर से उसने कहा, 'बड़ी खुशी की बात है।'

रमिया ने कहा–'दिदिया कुछ अपने हाथ में तो है नहीं। चाहे खुशी हो चाहे गम। जितना भगवान को देना है वह तो देगा ही।'

सूरज देवी ने बीच में ही पूछा–'सुना तो है अस्पतालों में कुछ मिलता है। जिससे चाहो तो लरिका बच्चा होंगे न चाहो तो नहीं होंगे।

रमिया ने शान बघारते हुये कहा–'अरे यह तो हमको मालूम है। चाहो तो बिल्कुल ही बन्द हो जायें।'

सूरज देवी ने कहा–'हमको तो लगता है यह सब सरकार का झूठा प्रचार है। भला यह सब कैसे हो सकता है।'

राधा ने समझाते हुये कहा–'देखो यह तो तुम सब लोग भली भांति जान लो छोटा परिवार सुखी परिवार। छोटा परिवार होगा तो उसका लालन पालन सब कुछ अच्छी तरह हो सकेगा।

परिवार नियोजन के विषय में किसी दिन केन्द्र पर डाक्टरनी दीदी को बुलाएंगे। वह सब अच्छी तरह से बता देगी।

अब सब लोग अपना अपना काम निकालो, करा दें। शाम होने वाली है।' सब फुरती से अपने अपने काम में लग गयीं।

आज पूरे पन्द्रह दिन के बाद राधा के घर चहल-पहल है। राधा मायके गयी थी। सरला को इम्तहान दिलाने। दोनों खुश हैं। पास होने की पूरी आशा है।

दोपहर में सबके इकट्ठा होते ही थोड़ी देर इधर-उधर की बातें होती रहीं। सुखिया कहने लगी–'भौजी, एक बात बताओ, पूरे गांव में बस आपके कृषक चर्चा मंडल, आंगनबाड़ी केन्द्र और महिला मडल की चर्चा है। पूरे गांव की काया पलट हो गयी है। घर घर आंगन बाड़ी लग गई हैं। हर घर में सिलाई, कढ़ाई होने लगी है। धन्नो झवला, बाबाशूट सिलकर बाजार भेजने लगी है।'

सोनपतिया ने कहा–'भौजी, कल हमारी बनायी डलिया, पंखा, चटाई दस रुपये में बिके थे।'

कमला कहने लगी–'सबसे बड़ी बात तो घर आंगन बाहर सब चम चम चम चम चमकने लगे हैं।

हमको तो याद करने में भी बड़ी शरम लगती है। पहली बार जब भौजी हमारे घर कथा पर गयी थीं, तो चारों ओर बस गन्दगी ही गन्दगी थी।'

राधा यह सब सुन बड़ी खुश हुई। सोचने लगी– गोपाल का सपना साकार हो रहा है।

उस दिन खूब बातें हुईं।

सोना को मौका मिल गया। लपक कर गयी अन्दर से ढोलक उठा लायी और पूरे जोर शोर से गाने लगी–

सूरज मुख न जइबं न जइबं राम,
बिन्दिया का रंग उड़ जाये,
हो मोरी बिन्दिया का रंग उड़ जाय।
लाख टका की मोरी बिन्दिया,
हाय मोरी बिन्दिया हाय मोरी बिन्दिया।
नन्दी का जिया ललचाय,
हाय मोरी बिन्दिया का रंग उड़ जाय।
सूरज मुख.....
बिन्दिया पहन के मैं निकली आंगनवां,
देवरा देख ललचाय,
हाय मोरी बिन्दिया का रंग उड़ जाय।

सूरज मुख.....
बिन्दिया पिया के जिय अस भाए,
जिय अस भाये हाय जिय अस भाये।
वो हमको कहा न जाये,
हाय मोरी बिन्दिया का रंग उड़ जाय।
सूरज मुख.....'

गाने बजाने से सभी बड़ी खुश हुईं। सिलाई कर लेने से सभी के घर खूब कतरन इकट्ठा हो गयी थी। इस लिये आज राधा ने सबको कतरन से ही आसनी, झाड़न, खिलौने बनाना सिखाया।

इम्तहान के बाद भी सरला कुछ न कुछ पढ़ती रहती। राधा उसके लिये शहर से अच्छी अच्छी किताबें ले आयी थी।

राधा ने काका से राय लेकर राजीव को चिट्ठी लिख दी। परीक्षाफल जून के तीसरे हफ्ते में निकल जायेगा अतः आखिरी हफ्ते में विदा करा ले जाये। उसने सरला के लाख मना करने पर भी रोल नम्बर भी लिख दिया था। उसे अपनी और सरला की मेहनत पर पूरा भरोसा था।

गोपाल की भी चिट्ठी आयी थी। परीक्षा खत्म होने वाली है, मैं जल्दी ही आ रहा हूं। तुम्हारे पत्रों से गांव के बारे में जानकर देखने की बड़ी इच्छा हो रही है।

समय होने पर राधा सरला बरोठे में पहुंचकर महिलाओं का इन्तजार करने लगीं। लेकिन आज बहुत कम लोग आये थे। पूछने पर पता चला, कमला के लड़के को

नजर लग गयी है। ओझा झाड़ने आये हुये हैं। विमला की शादी दहेज न तय हो पाने के कारण टूट गयी, इस लिये आज विमला नहीं आयी।

राधा सोचने लगी–आज मौका अच्छा है इन विषयों पर बात करने का।

उसने कहना शुरू किया–'देखो तुम लोग पढ़ लिख गयी हो। समझदार हो। शहर से जो किताबें लायी हो उन्हें भी पढ़ा है। अपने आस पास भी देखा है। कभी कोई बीमार पड़ जाये तो तुरन्त डाक्टर को दिखा कर सलाह लेनी चाहिये। ओझा के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये।

हम महिलायें ही समाज की कुरीतियों जैसे अंध विश्वास, दहेज, छुआछूत, पर्दा प्रथा आदि का भी विरोध करके इसे हटाने में मदद कर सकती हैं।'

आज राधा ने सबको सोयाबीन और चोकर के व्यंजन बताये। सुखिया ने भी लहसुन की पत्ती का अचार बनाना सिखाया।

अब राधा का बरोठा चेतना केन्द्र बन गया था। यहां हर विधि पर खूब चर्चा होती। कई महिलायें शिक्षित हो गयी हैं। कई ने अपना रोजगार शुरू कर दिया है। चारों ओर राधा की ही चर्चा है।

आज तो राधा, सरला की खुशी का ठिकाना नहीं था। सरला के तो पैर जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। उसे तो ऐसा लग रहा था जैसे वह उड़ी जा रही हो। वह उड़ना चाह भी रही थी अपने राजीव के पास जाने के लिये।

पूरे गांव में बात फैल गई थी कि सरला बहुत अच्छे नम्बर से हाई स्कूल में पास (द्वितीय श्रेणी) हो गयी है। काका ने भी सुना तो हनुमान जी का प्रसाद चढ़ा कर लौटे।

आते ही सरला को आवाज दी–'सरला, सच तेरी भौजी देवी है देवी ! तेरी तो काया पलट दी। मैं शान से कह तो देता था, तू यहीं रहेगी। पर मन ही मन मुझे तेरा ऐसे रहना कचोटता था।

सरला के पास होने की खबर पाकर सब आज जल्दी ही आ गयीं। दोपहर में खूब गाना नाच सब कुछ हुआ।

आज देवीगान, सोहर, बन्नी, बन्ना सभी खूब गाये गये। ढोलक की थाप मजीरे की झनकार, घुंघुरुओं की झुनझुन के बीच जब सरला नाची—

यही ढइयां टिकुली हेराय गई दइया रे,

तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई परी थिरक रही हो।

तभी डाकिया तार दे गया, जिससे पता चला कि परसों राजीव लिवाने आ रहा है। राधा को तो खुशी दुगनी हो गयी। सरला शरमाकर अन्दर भाग गयी। चारपाई पर जाकर आंखें बंद कर लेट गयी। अपने सपनों की दुनिया में खो गयी।

राधा ने पूरा घर बाहर सब साफ सुथरा करके जगमगा दिया। उसने राजीव के लिये नये नये पकवान तैयार किये। सरला से एक रूमाल कढ़वाया, जिस पर राजीव का नाम भी लिखवा दिया। चावलों से एक ताज महल बनवा कर रखा।

राजीव आया। खुश तो सभी थे पर सरला की खुशी का ठिकाना न था। आज उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। होठ मुस्करा रहे थे। आंखें शरमा रही थीं।

राधा ने जब राजीव को सरला के हाथ का बना सब सामान दिखाया तो वास्तव में राजीव के खुशी के आंसू छलछला आये। उसने बस इतना कहा—भाभी तुम धन्य हो! तुमने हम दोनो का जीवन बरबाद होने से बचा लिया।

संयोग से उसी दिन गोपाल भी आ गया। अब क्या था सोने में सोहागा! खूब बैठक जमी। सबने खूब दिल खोलकर बातचीत की, हंसी मजाक हुआ, खानापीना हुआ। रात में चौपाल में भी राजीव गोपाल दोनों गये। वहां सभी राधा की ही प्रशंसा कर रहे थे।

आते ही गोपाल राधा के पास गया। 'राधा! सच तुमने तो कमाल कर दिया। मेरे आने से पहले ही मेरा सपना साकार कर दिया। गांव की तो काया ही पलट दी। सबकी जबान पर आज तुम्हारी ही तारीफ है।' राधा क्या कहती, बस शरमा कर ही रह गई।

□□□

I A E A
प्रौढ़ शिक्षा

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002